International Journal of Education and Science Research Review

E-ISSN 2348-6457

June- 2017, Volume-4, Issue-3

P-ISSN 2349-1817

www.ijesrr.org

Email- editor@ijesrr.org

अज्ञेय के उपन्यासों का परिचयात्मक विश्लेषण

डॉक्टर सारिका धोंडिराम शेप

सार

हिन्दी साहित्य में "अज्ञेय" का नाम बहुत प्रसिध्द हो चुका है। "अज्ञेय " इस नाम को बहुत से लोग उपनाम न समझकर इसे पूरा नाम ही समझते है। लेकिन उनका वास्तविक नाम सच्चिदानंद हीरानन्द वात्स्यायन है। उनके पिता का नाम होरानन्द वात्स्यायन है। सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' (7 मार्च, 1911–4 अप्रैल,1987) को कवि, शैलीका र, कथा–साहित्य को एक महत्त्वपूर्ण मोड़ देने वाले कथाकार, ललित–निबन्धकार, सम्पादक और अध्यापक के रूप में जाना जाता है। इनका जन्म 7 मार्च 1911 को उत्तर प्रदेश के कसया, पुरातत्व–खुदाई शिविर में हुआ। बचपन लखनऊ, कश्मीर, बिहार और मद्रास में बीता। बी.एससी. करके अंग्रेजी में एम.ए. करते समय क्रांतिकारी आन्दोलन से जुड़कर बम बनाते हुए पकड़े गये और वहाँ से फरार भी हो गए। सन 1930 ई. के अन्त में पकड़ लिये गये। अज्ञेय प्रयोगवाद एवं नई कविता को साहित्य जगत में प्रतिष्ठित करने वाले कवि हैं। अनेक जापानी हाइकु कविताओं को अज्ञेय ने अनूदित किया।

मुख्य शब्द: *अज्ञेय , उपन्यासों ,*

जीवन परिचय

प्रारंभिक शिक्षा–दीक्षा पिता की देख रेख में घर पर ही संस्कृत, फारसी, अंग्रेजी और बांग्ला भाषा व साहित्य के अध्ययन के साथ हुई। 1925 में पंजाब से एंट्रेंस की परीक्षा पास की और उसके बाद मद्रास क्रिस्चन कॉलेज में दाखिल हुए। वहाँ से विज्ञान में इंटर की पढ़ाई पूरी कर 1927 में वे बी.एससी. करने के लिए लाहौर के फॅरमन कॉलेज के छात्र बने। 1929 में बी. एससी. करने के बाद एम.ए. में उन्होंने अंग्रेजी विषय लिया; पर क्रांतिकारी गतिविधियों में हिस्सा लेने के कारण पढ़ाई पूरी न हो सकी।

कार्यक्षेत्र

1930 से 1936 तक विभिन्न जेलों में कटे। 1936–37 में सैनिक और विशाल भारत नामक पत्रिकाओं का संपादन किया। 1943 से 1946 तक ब्रिटिश सेना में रहे; इसके बाद इलाहाबाद से प्रतीक नामक पत्रिका निकाली और ऑल इंडिया रेडियो की नौकरी स्वीकार की। देश–विदेश की यात्राएं कीं। जिसमें उन्होंने कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय से लेकर जोधपुर विश्वविद्यालय तक में अध्यापन का काम किया। दिल्ली लौटे और दिनमान साप्ताहिक, नवभारत टाइम्स, अंग्रेजी पत्र वाक् और एवरीमैंस जैसी प्रसिद्ध पत्र–पत्रिकाओं का संपादन किया। 1980 में उन्होंने वत्सलनिधि नामक एक न्यास की स्थापना की जिसका उद्देश्य साहित्य और संस्कृति के क्षेत्र में कार्य करना था। दिल्ली में ही 4 अप्रैल 1987 को उनकी मृत्यु हुई। 1964 में आँगन के पार द्वार पर उन्हें साहित्य अकादमी का पुरस्कार प्राप्त हुआ और 1978 में कितनी नावों में कितनी बार पर भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार।

अज्ञेय रचनावली

अज्ञेय रचनावली के १८ खंडों में उनकी समस्त रचनाओं को संग्रहित करने का प्रयास किया गया है। इसके संपादक कृ ष्णदत्त पालीवाल हैं। इन खंडों की सामग्री का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है–

1. काव्य
2. कहानियाँ
3. उपन्यास
4. भूमिकाएँ
5. यात्रा–वृत्त
6. डायरी
7. निबन्ध
8. संस्मरण, नाटक, निबन्ध
9. साक्षात्कार
10. साक्षात्कार और पत्र
11. अनुवाद

जीवनवृत्त :

हिन्दी साहित्य में "अज्ञेय" का नाम बहुत प्रसिध्द हो चुका है। "अज्ञेय" इस नाम को बहुत से लोग उपनाम न समझकर इसे पूरा नाम ही समझते है। लेकिन उनका वास्तविक नाम सच्चिदानंद हीरानन्द वात्स्यायन है। उनके पिता का नाम होरानन्द वात्स्यायन है। "अज्ञेय" का जन्म 7 मार्च, सन 1911 को उत्तरप्रदेश में गोरखपुर से लगे हुए देवरिया जिले के "कसिया" नामक ग्राम में हुआ था पर कोसया का संस्कृत नाम ष्कुशीनगरष है और भगवान बुध्द ने इसो स्थान पर निर्वाण प्राप्त किया था। वात्स्यायनजो सारस्वत 'गोत्रीय पंजाबी ब्राहमण है। और "अज्ञेय" के पिता श्री होरानन्दजी पुरातत्व विभाग में एक उच्च पदाधिकारी थे। आपके दादा संस्कृत के विदान थे। पिताजी की नौकरी के कारणवश अज्ञेय को बचपन से ही श्रीनगर, नालन्दा, पटना, लाहौर, लखनऊ, बडोदा, ऊटकमंड और मदरास आदि स्थानों में घूमने का अवसर मिला। और इसी कारण "अज्ञेय" को अनेक विद्वानों के संपर्क में रहने का अवसर मिला। परंतु सन 1946 में श्री हीरानन्दजी की मृत्यु गुरूदासपुर में हो गयी। "अज्ञेयष की प्रारंभिक शिक्षा घर पर ही हुई। संस्कृत, फारसी और अंग्रेजी का ज्ञान उन्हें घर पर ही मिला। "श्री अज्ञेय" का प्रारंभिक जीवन शान्त, प्रकृति की गोद और विदान पिता की छाया में व्यतीत हुआ है। इसलिए प्रकृति के एकान्त सौन्दर्य के प्रति प्रबल आकर्षण और स्वतन्त्र चिन्तन की प्रवृत्ति आपका संस्कार बन चुकी है। बौध्दिक परिष्कार और सांस्कृतिक सौन्दर्य चेतना आपके व्यक्तित्त्व संघटन के प्रमुख उपादान हैं। 1 सन 1925 में "अज्ञेय" हाईस्कूल और सन 1927 में इंटरमीडिएट की परीक्षा उत्तीर्ण की। और बाद में सन 1929 में लाहोर पंजाब के फारमन कालेज से बी. एस. सी. की परीक्षा उत्तीर्ण की। इसी बीच लाहोर में अमेरिकी प्रोफेसर जे एम बनेड और प्रोफेसर डेनियल से "अज्ञेय" का सम्पर्क हुआ। उन्हें अंग्रेजी साहित्य, बाइबिल ज्ञान और रविन्द्रनाथ ठाकुर के अध्ययन के लिए स्वर्णपदक प्राप्त हुआ। बाद में सन 1929 में "अज्ञेय" ने एम. ए. प्रथम वर्ष अंग्रेजी में प्रवेश लेने के बाद लाहौर में उनके कांतिकारी जीवन का आरंभ हुआ। लगभग पांच वर्षों तक "अज्ञेय" ने कातिकारी जीवन बिताया और इसी बीच हिन्दुस्थान सोशालिस्ट रिपब्लिकन पार्टी के सदस्य बनने पर उनका " आजाद सुखदेव, भगवतीचरण बोहरा आदि से परिचय हुआ। "जभेग" के क्रांतिकारो जीवन की अवधि का अधिकांशतः इतिहास देश के इतिहास से सम्बध्द है। इनके कांतिकारी जोवन को अवधि 1929 से 1936 तक की है। इसी बीच ष्अज्ञेयष एक लेखक के रूप में जाने लगे है। हिन्दी जगत् में उनका एक स्थान निश्चित हो चुका है। सन 1930–31 के समय में ष्अज्ञेयष जेल में थे। स्वयं अज्ञेय भी इसी मत के हैं। वे लिखते हैं कि उन्होंने ष्जेल जाने के बाद से जोरों से लिखना शुरू किया। उपन्यास, कहानी, कविता, निबन्ध – सभी कुछ। इस समय से फिर लेखन का कम बराबर चलता रहा। मैं अपने रचना काल का प्रारंभ तभी से मानता हूं।" अमृतसर में फैक्टरी कायम करने का काम करते

वक्त यहों देवराज और कमल कृष्ण के साथ 15 नवम्बर 1930 को गिरफ्तार हुए। गिरफ्तारी के बाद एक महीने लाहौर किले में रहे, फिर अमृतसर की हवालात में रहना पड़ा। 1934 के मध्य में घर के अन्दर ही उन्हें नजरबन्दी हो गई। और घर आने पर एक साथ छोटे भाई की मृत्यु और माता की मृत्यु का पता चल जाता है। साथ ही पिताजी की नौकरी से निवृत्ति आदि सभी घटनाओं के कारण उनके मन में हलचल मच गई। नजरबन्दी हटने तक इन्हें डलहौजी और लाहौर में ही रहना पड़ा। सात साल का समय उन्हें इस तरह से काटना पड़ा।

अपनी उपजीविका चलाने के लिए उन्होंने काम करना शुरू किया। सन 1936 ई. से लेकर कुछ समय तक वे आगरा के समाचारपत्र "सैनिक" के सम्पादकीय विभाग में काम करते रहे। बाद में मेरठ के किसान आंदोलन में काम करने लगे। सन 1937 ई. में बनारसीदास चतुर्वेदी के आग्रह पर "विशाल भारत" लकताई के संपादकीय विभाग में काम करने लगे। एक डेढ़ वर्ष के बाद कुछ समय तक वह पिता के पास बडोदा में रहने लगे और पिताजी की इच्छानुसार विदेश जाकर अध्ययन पूरा करने की योजना बनाने लगे। किन्तु बीच में युध्द छिड जाने के कारण उनकी यह अभिलाषा अधूरी ही रही। जुलाई 1940 में ष्अज्ञेय ष ने संतोष के साथ शादी की। परंतु कुछ ही दिनों के बाद उनका संबंध टूट गया। सन 1947 से वह इलाहाबाद से ष्प्रतीकष का प्रकाशन करने लगे। "प्रतीक" का घेरा बहुत ही बढ़ा था। "प्रतीक" ने नये साहित्य को मान्यता दी, नये आलोचक निर्माण किये। लेकिन आगे ष्प्रतीकष न चल सका। सन 1955 ई. में युनेस्को के निमंत्रण पर पश्चिमी युरोप की यात्रा की, इस यात्रा ने कई रचनाओं के निर्माण की प्रेरणा उन्हें मिल गई। 7 जुलाई 1956 में उनकी दूसरी शादी कपिला मलिक से हुई और वे प्रयाग में रहने लगे। अगस्त 1957 में जापान और फिलिपिन की यात्रा की। स्वदेश लौटने पर सन 1960 तक दिल्ली में रहे। अप्रैल 1960 में दूसरी बार युरोप की यात्रा की। 1961 के सितंबर में अमेरिका के कॅलिफोर्निया विश्वविद्यालय में भारतीय संस्कृति और साहित्यष के अध्यापक बनकर गये, जुलाई 1964 में स्वदेश लौटते ही वे अस्वस्थ हो गये। उन्हें दिल का दौरा पड़ा। इस बीमारी के बाद वे पहले की अपेक्षा दुःख का आघात सहने में अधिक समर्थ बने। कर्तव्य के प्रति जागरूक रहे और धैर्यशील बने।

दिल्ली से प्रकाशित होनेवाले "दिनमान" साप्ताहिक का सम्पादन उन्होंने फरवरी 1965 में किया। छः महिने के अन्दर ही "दिनमान" को उनकी कल्पना और निष्ठा ने हिन्दो का श्रेष्ठ साहित्यिक पत्र बना दिया। साहित्य अकादमी ने सन 1965 में पांच हजार रूपये का प्रथम पुरस्कार उनकी काव्यकृति ष्आंगन के पार द्वारष के लिए घोषित कर सम्मानित किया। 1966 में "अज्ञेय" पूर्व युरोप की यात्रा के लिए निकल पडे। इस यात्रा में वे रूमानिया, युगोस्लाव्हिया रूस और मंगोलिया भी गए। युगोस्लाव्हिया में नोबेल पुरस्कार विजेता आन्द्रिचे तथा स्लोवेनी कवि मार्तइ बीर से मिले। वहाँ उन्होंने हिन्दी कविता और उपन्यास के युगोस्लाव्ह अनुवाद तथा युगोस्लाव्ह कविता और उपन्यास के हिन्दी अनुवाद की योजना बनाई। 1966 में हो विदेशसे लौटने पर ष्अज्ञेयष ने बिकानेर, अलमेर, सिमला, दिल्ली और एर्नाकुलम के आयोजनों में भाग लिया। समस्त भारतीय आधुनिक हिन्दी साहित्य के सम्बन्ध में अपने विचार व्यक्त किये। जनवरी 1967 में ऑस्ट्रेलिया में "एशियाई देशों में साहित्य विनियम" शीर्षक विषय पर संगोष्ठी आयोजित हुई जिसमें उन्होंने भारतीय प्रतिनिधि के . अधिकार से भाग लिया। अन 1967 में ही "अज्ञेय" का पहला नाटक "उत्तर प्रियदर्शी" रंगमंच पर आ गया। इसी वर्ष उनके एक उपन्यास का अंग्रेजी में अनुवाद प्रकाशित हुआ। आश्चर्य की यह बात है कि, ष्अज्ञेयष विदेश यात्रा करते रहे थे और उनकी लेखनी बिना रूके साहित्य निर्मिती में लगी हुई थी। सन 1971 में विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन ने उन्हें डी.लिट. को मानद उपाधि दे दी। हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग में उन्हें वाचस्पति की उपाधि से सम्मानित किया। 1972 में उत्तरप्रदेश हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने आपको "विद्यावारिधि" उपाधि दो।

" अज्ञेय" का व्यक्तित्त्व बहुमुखी और संश्लिष्ट होने के कारण इस परिचय में उसे पूरी तरह से समाहित नहीं किया जा सकता और ऐसा हमारा दावा भी नहीं है। "अज्ञेय" को 1978 को ष्भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कारष् षकितनी नावों में कितनी बारष् इस कविता संकलन को मिला।

उपन्यस :

1. शेखर रू एक जीवनी भाग – 1 1941 8
2. शेखर रू एक जीवनी भाग – 2 81944
3. नदी के दीप 19518
4. "अज्ञेय" के उपन्यासों का वैशिष्टय:

वास्तविकता तो यह है कि आधुनिक हिन्दी कथा साहित्य के संदर्भ में ष्अज्ञेयष् का कथा साहित्य देखा जाय तो वह एक ओर भारतीय जनजीवन, भारतीय जनजीवन की चेतना तथा विषमताओं आदि का यथार्थ चित्रण करता है। तो दूसरी ओर अपनी शैलीशिल्प तथा मानवम्न की शाश्वत अनुभूतियों को कलात्मक ढंग से स्पष्ट करता है। "अज्ञेय" के कथा साहित्य में आधुनिक युग का यथार्थ और पूर्ण प्रतिबिंब दिखाई देता है। शिल्पविधान की दृष्टि से अथवा भावावधान की दृष्टि से ष्अज्ञेयष् का कथासाहित्य आधुनिक हिन्दी कथा साहित्य का प्रतिनिधित्त्व करता है। हिन्दी उपन्यास साहित्य में ष्अज्ञेयष् का एक विशेष स्थान है। उनके पूर्ववर्ती और उनके बाद के काल के उपन्यासों की तुलना में परिमाण की दृष्टि से थोडा लिखने के बाद भी ष्अज्ञेयष् ने हिन्दी साहित्य पंरपरा में अपना एक विशिष्ट स्थान बनाया है।

शेखर: एक जीवनी :

" अज्ञेय" प्रेमचन्दोत्तर युग के विशिष्ट उपन्यासकारों में से हैं। ष्अज्ञेयष् ने ष्शेखर रू एक जीवनीष् के माध्यम से हिन्दी उपन्यास जगत् में प्रवेश किया और हिन्दी उपन्यास ने एक नये युग में प्रवेश किया। संभावनाओं की दृष्टि से सांकेतिक रूप में इसका महत्त्व अधिक है। ष्अज्ञेयष् एक प्रयोगवादी साहित्यिक थे। सभी रचनाओं में उन्होंने नये–नये प्रयोग किये।

"शेखर रू एक जीवनीष् ष्अज्ञेयष् का सर्वप्रथम उपन्यास है, जो दो भागों में प्रकाशित हुआ है। कथा–शिल्प की दृष्टि से यह नयी पीढ़ी की प्रवर्तक औपन्यासिक कृतियों में माना जा सकता है, क्योंकि आगे लिखे गये अनेक उपन्यासों पर इसको स्पष्ट छाया मिलती है। उपन्यास की कथा को आत्मकथात्मक शैली में प्रस्तुत किया गया है। "शेखर : एक जीवनीष् में एकत्रित पीडा को सिर्फ एक रात में देखे दृश्य को शब्दांकित करने का प्रयत्न है। "शेखर : एक जीवनी" में मनोविश्लेषण के द्वारा एक विशेष विचारतत्त्व के निर्माण का प्रयत्न भी है। इस उपन्यास में शेखर नामक विद्रोही व्यक्ति के मनोविश्लेषण की कथा है। "शेखरः एक जीवनी" की कथा एकदम अलग है। जीवन की विविधताओं एवं जीवन के विभिन्न पक्षों के प्रति उसकी विद्रोह –भावना ही इस उपन्यास के कथानक का प्रधान आधार है। "शेखर : एक जीवनीष् एक ऐसे व्यक्ति की कहानी है जो अपने ह्रदय में रूढिगत सिध्दांतो तथा तद्जीनत भावनाओं के प्रति एक अदम्य. विद्रोह भावना पाता है। उसके जीवन का विकास उसकी समस्त जागरूकता के साथ होता है। वह अपने बचपन की अनेक घटनाओं का लेखा–जोखा करता है। उसकी यह तर्क–प्रवृत्ति उसकी अहंभावना का एक अंग है।"

इस उपन्यास का कथानक सुनियोजित ढंग का नहीं है। इतनाही नहीं अलग–अलग दिशा तथा गतियों का विश्लेषण है। यही विश्लेषण उपन्यास को कथा का रूप देता है। शेखर के शैशव काल से उपन्यास का प्रारंभ होता है। और जीवन के अंत तक कुछ प्रमुख तथा आकर्षक जीवन चित्र इसमें आ जाते है। शेखर के शैशवकालीन चित्रण में "अज्ञेय" ने अपने जीवन की अनेक घटनाओं को चुना है। फिर भी शेखर लेखक के व्यक्तित्व का दूसरा रूप नहीं है। "अज्ञेय" मानते है ष्शेखरष जीवन दर्शन में "स्वातंत्र्य खोज" है। शेखर के स्वातंत्र्य की खोज में टुटी हुई नीतिविषयक परंपरा के बीच नीति के मूल स्त्रोत की खोज इस उपन्यास पर फ्रायडवादी विचार दर्शन का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। "अहं, भय और काम ये तीन मुलभूत प्रवृत्तिया शेखर के चरित्र निर्माण में कहीं मदद करती है तो कहीं बाधायें डालती है। शेखर के चरित्र निर्माण में बौध्दिकता का विरोध अबौध्दिकता ने किया है। उसके विकास में भय और काम बाधा डालते हैं और उसके अहं पर प्रहार करते हैं। इस उपन्यास ने व्यक्तिवाद के साथ सामाजिकता भी आ गई है। जहाँ व्यक्तिवाद का आधार विज्ञान है वहाँ सामाजिकता का आधार आवेग है। "शेखर: एक जीवनीष एक प्राणवान कान्तिकारी की अपनी जीवन–यात्रा के अन्तिम पड़ाव की स्थिति फांसी की छाया में – अपने विगत जीवन का प्रत्यावलोकन है।"

2. नदी के दीप:

"अज्ञेय" का यह दूसरा उपन्यास है। यह खंड रूप में लिखा गया उपन्यास है। इसमें कथात्मक एकता की दृष्टि से विभिन्न पात्रों का परस्पर पत्रव्यवहार और अंतराल दिखलाया गया है। जैसे ष्शेखर रू एक जीवनीष आत्मकथात्मक ढंग से लिखने के कारण इस युग की महत्त्वपूर्ण कृति है, उसी प्रकार ष्नदी के दीपश खंड रूपों में लिखे गये उपन्यासों में महत्त्पूर्ण स्थान पाता है। इस उपन्यास का प्रकटीकरण पक्ष विशेष शक्तिशाली है। शिल्प विधान की दृष्टि से यह उपन्यास अद्वितीय है। "नदी के द्वीप" का कथानक अत्यन्त संक्षिप्त है लेकिन अज्ञेय की सूक्ष्म तथा कलात्मक विश्लेषणप्रिय प्रतिभाने इसे एक उपन्यास का स्वरूप प्रदान किया है। कथानक के इस विस्तार के मूल में लेखक की कविचेतना ही है, जो स्थूल कथाशों को गति देती हुई सूक्ष्म एवं भावनात्मक अंशों में रम जाती है।

"नदी के दीप" की कथा का विकास चार पात्रों के इर्द गिर्द ही हुआ है। इसकी कथा चार प्रधान पात्र–पात्रियों के चारेत्र को आधार बनाकर चलती है। इनमें से एक को प्रधानता देकर इस कथा का विकास हुआ है। बीच में कथा को सूत्रबध्द करने तथा कथात्मक एकता की रक्षा करने के लिए विविध पात्रों के पारस्परिक पत्र–व्यवहार तथा अन्तरालों का आश्रय भी लिया गया है। खण्ड–कथा रूप में लिखे गये उपन्यासों में ष्नदी के दीप" का स्थान विशिष्ट है। इस उपन्यास की कथा को कई खण्डों में विभक्त किया गया है। कथा का नायक भुवन है, जिसे केन्द्र बनाकर उपन्यास का ढांचा तैयार किया गया है। उपन्यास में प्रारम्भ से लेकर अन्त तक इसी प्रधान कथासूत्र की प्रमुखता है। पूरी तरह से कथा का विस्तार हो गया है। साथ ही लेखक की संवेदनशीलता ने उपन्यास के प्रभाव को अखंड बनाये रखने का प्रयत्न किया है।"

"नदी के दीप" की सबसे बड़ी उपलब्धि आधुनिक नारी के अंतर्मन की गहनतम प्रवृत्यिों एवं भावनाओं को सूक्ष्म विश्लेषण है। श्री नेमिचन्द जैन के शब्दों मे – आधुनिक नारी के व्यक्तित्व के इतने विविध पक्ष इतनी गहराई और सूक्ष्मता के साथ अपने आगे प्रत्यक्ष कर सकता और फिर उसे शब्दबध्द कर सकना अपने आप में एक बडी साहित्यिक उपलब्धि है।

"नदी के दीप" में बहुत कुछ शेखर का विकसित रूप दिखाई देता है। ष्नदी के दीपष का भुवन शेखर का ही विकसित रूप है जो नायक के रूप में स्थापित हुआ है। यहाँ "अज्ञेय" का दृष्टिकोण व्यक्ति और समाज के संघर्षा से हट जाता है। और नीतिविषयक समस्याये तथा प्रेम कथायें आदि तक वह मर्यादित हो जाता है। "नदी के दीप" खुले आम एक प्रेम कथा है। आत्मविचार और दर्शन की दृष्टि से उपन्यास का सबसे अधिक सशक्त अंश है, इस उपन्यास का समाप्ति भाग। गोरा को पत्र लिखते–लिखते एकाएक: भुवन उदिग्न हो उठता है और उपन्यास की समाप्ति हो जाती है।

3. अपने–अपने अजनबी:

"अज्ञेय" का अब तक का यह अंतिम उपन्यास है। इसमें मृत्यु–क्षणों के संदर्भ में मानव–मन का विश्लेषण किया गया है। पुस्तक के आवरण पृष्ठ पर अंकित है – "मृत्यू को सामने पाकर कैसे प्रियजन भी अजनबी हो जाते हों और अजनबी एक पहचाने हुए कैसे इस चरम स्थिति में मानव का सच्चा चरित्र उभरकर आताहै – उसका प्रत्यय, उसका अदम्य साहस और उसका विमल अलौकिक प्रेम भी वैसे ही और उतने ही अप्रत्याशित ढंग से क्रियाशील हो उठते है जैसे उसकी निम्नतर प्रवृत्तियाँ। सामान्यतः "अपने अपने अजनबी" उपन्यास में आसन्न मृत्यु के चरम आतंक के क्षणों में मानव–प्रवृत्तियों का विश्लेषण चित्रित किया गया है। उपन्यास में कुल–मिलाकर तीन अध्याय हैं और तीनों में अलग–अलग प्रकार के तीन दृ श्य अंकित हैं। प्रथम में बर्फ से ढंके हुए एक मकान का, दूसरे में बाढ की विभीषिका में लगभग अर्थक्षत नदी के पुलपर बसे एक बाजार का और तीसरे में जर्मन सैनिकों से पादाकांत एक बाजार का चित्र है। तीनों में ही मृत्यु का भय व्याप्त है। किन्तु भय का चित्रण करना ही इस उपन्यास का लक्ष्य नहीं है तो स्वातंत्र्य की खोज यहाँ भी मूल उद्देश्य प्रतीत होता है। "अपने अपने अजनबी" की सेल्मा "मृत्यु" को जीवन का सबसे बडा सत्य समझती है। किन्तु "योके" जीवन को अपने अस्तित्व के बोध को, सर्वाधिक महत्त्व देती है। अस्तित्त्व का बोध स्वतंत्रता की अनुभूति में ही है, इसीलिए वह स्वतंत्रता चाहती है।

उपन्यास की विशेषता और कथानक की परिसीमता का प्रयोग कौशल्य के साथ हुआ है। इसमें ‘अज्ञेय’ की व्यक्तिगत विशिष्टता "प्रयोग की नवीनता" देखने को मिलती है। यह एक प्रतीकात्मक और दुःखान्त उपन्यास है। यह एक प्रथम आधुनिक तथा अस्तित्त्ववादी उपन्यास है। उन्होंने आधुनिकता के विज्ञान विरोधी पक्ष को गृहण किया है।

––– इसके माध्यम से ‘अज्ञेय’ को एक नई रचना पध्दात का विकास हुआ है। यह उपन्यास मृत्यु की भयंकारिता से भरा पड़ा है। "अज्ञेय" का यह अंतिम उपन्यास अपने पूर्ववर्ती उपन्यासों के कथानक के अनावश्यक विस्तार के दोष से बचा है। लेकिन वैचारिक बोझिलता इसमें आ गई है।

उपन्यासों में जीवनदर्शन:

"शेखर : एक जीवनी" इस उपन्यास की मुख्य विशेषता इसकी व्यक्तिवादी जीवन दृष्टि है। लेखक व्यक्तिवादी जीवन दृष्टि के प्रकाश में ही आज के युग की समस्याओं के समाधान को ढूंढता है। इसमें व्यक्ति के महत्त्व को सबसे ऊपरी स्थान दिया है। व्यक्ति के विचारों को अगर स्वतंत्रता मिल जाती है तो उसका विकास हो सकता है। यहाँ "अज्ञेय" के विचारों पर मनोविश्लेषणवादी फ्रायड के विचार दर्शन का परिणाम दिखाई देता है। अहं, भय, और लिंग संबंधी विचार व्यक्ति की मूल प्रेरणाएं है। इन प्रेरणाओं पर किसी भी प्रकार का बंधन उन्हें मान्य नहीं है। बंधन तो अनिष्ट और अमंगल मनोभावों पर ही योग्य होते हैं।

"शेखर की सृष्टि करते हुए लेखक श्री अज्ञेय की दृष्टि एक विद्रोही और आतंकवादी व्यक्तित्व की मनोभूमि सम्भावना पर केन्द्रित रही है। शेखर अभिजात वर्ग का प्रतीक पुरूष है। वह टूटती हुई नैतिक रूढियों के बीच नीति के मूल–स्त्रोत की खोज करता है। वह समाज की खोखली सिध्द हो जानेवाली मान्यताओं के बदले व्यक्ति की दृढतर मान्यताओं की प्रतिष्ठा करना चाहता है। उसे जो सत्य दिखाई देता है उसे अनदेखा करके वह अपने को प्रवंचित नहीं करना चाहता। इसीलिए वह विद्रोही है। वस्तुतः शेखर को जो कुछ दिखाई पडा है वह आधुनिक मनोवैज्ञानिक एवं बोदिक चिन्तक के विकास का परिणाम है। शेखर निस्सन्देह एक आधुनिक सोचसम्पन्न अभिजात पुरुष है, किन्तु उसके विद्रोही व्यक्तित्त्व का प्रेरक तत्व काम–भावना है। "14 अहं, भय और लिंग संबंधी विचार जीवन की प्रेरणादायक शक्तियां है। इन शक्तियों को निंदनीय

अथवा अशुभ मानना अनुचित और अन्यायपूर्ण है। व्यक्तिवादी विचारधारा में सामाजिक नियम और नैतिकता का कोई स्थान नहीं है। इसमें व्यक्ति को बंधनरहित तथा मुक्त सत्ता की अपेक्षा की गई है। शेखर इसका उदाहरण है।

"नदी के दीप" उपन्यास मेगं भी फ्रायड के मनोविश्लेषणवादी विचार का प्रभाव दिखाई देता है। शेखर का विकसित रूप भुवन है। यहाँ भी व्यक्तिगत स्वतंत्रता को महत्त्व दिया गया है। व्यक्तिगत विचारों को महत्त्व देनेवाले उपन्यासों के पात्र शिक्षित, आत्मकेंद्रित, स्वाभिमानी और विचारशील प्राणी होते हैं। इसमें मृत्यु, प्रकृति, समाज, ईश्वर, जीवन, जगत, स्त्री–पुरूष, विवाह, प्रेम और यौन संबंधी उनकी धारणाएं उनके अपने जीवन–जगत वास्तव अनुभवों से निर्माण होती है। व्यक्ति को महत्त्व देनेवाले उपन्यासों में जीवन और जगत की समस्याओं के समाधान और उनके उपयोग का मूल्य जानना व्यक्तिहित की भावना से हुआ है। ष्नदी के दीप" में "अज्ञेय" का व्यक्तिवादी कवि रूप ही दिखाई देता है। इस उपन्यास के दोनों पात्र व्यक्तिवाद और स्वच्छन्दतावाद को ही महत्त्व देते हैं। रेखा आर्थिक दृष्टि से अपने पैरो पर खडी है वह एक शिक्षित नारी है। अपने जीवन का निर्णय वह खुद की इच्छा के अनुसार करती है। ष्नदी के दीपष के रेखा, भुवन और गौरा अपने आप को जीवन प्रवाह में दीप की तरह उपमा योग्य बनाते है और व्यक्तिवाद का ही समर्थन करते है।

"मनोविज्ञान की इस पीठिका पर अज्ञेय के "अपने अपने अजनबीष की सृष्टि हुई है। योके और सेल्मा के बीच के इसी भेद के आधारपर इस रचना की कथावस्तु का प्रसार हुआ है। इससे इसके नामकरण को सार्थकता भी स्पष्ट है। योके सेल्मा के और सेल्मा योके के सिध्दान्त को स्वीकार नहीं करती तो आश्चर्य भी क्या है? किन्तु दोनों के बीच जो खाई बन जाती है, वह एक मनोवैज्ञानिक समस्या है। " 15 साथ ही साथ ष्अपने अपने अजनबी" उपन्यास में अन्य उपन्यासों की तरह सभी जगहों पर अस्तित्ववादी जीवनदृष्टि का परिचय मिलता है। व्यक्ति और समाज एक दूसरे के लिए पूरक हैं। अस्तित्त्ववादी विचारधारा का प्रारंभ हसरेल हेडेगर और डेनिशचिन्तक कीर्केगार्द, नीत्शे, यास्पर्स, दस्तोवस्की, मार्शल, सार्च आदि की विचारसरणी में मिलता है। अस्तित्त्व की स्थिति तत्त्व से पहले है। जिसके कारण मनुष्य को जागतिक स्थिति स्पष्ट होती है। इसप्रकार अस्तित्त्ववादी विचार की भूमि पर मनुष्य, जीवन के जीवित संदर्भ में सोचता है। इस उपन्यास में अस्तित्त्ववादी विचारों के कुछ प्रतीकों का होना स्वीकार किया गया है। इसमें अस्तित्त्ववाद के साधन प्रात है। सात्र के अनुसार मनुष्य का अर्थ है आजादी। इस आजादी का अनुभव मनुष्य के मन में तब होता है जब वह अपनी जीवन प्रक्रियाओं के बारे में ध्यान से चिंतन मनन करता है और अनुमान निकालता है। यूरोपिय साहित्य में अस्तित्त्ववाद की बहुचर्चित प्रवृत्ति दिखाई देती है। अस्तित्त्ववादो में तर्क को अनुपयोगी समझा जाता है। "अज्ञेय" पर सार्च का प्रभाव दिखाई देता है। मनुष्य के पूर्ण आस्तत्त्व में विश्वास रखना इस विचारधारा का मुख्य सूत्र है।

निष्कर्ष :

व्यक्ति विकास के जीवन मूल्यों में आस्था रखनेवाले तथा सोद्देश्य साहित्य रचना करनेवाले उपन्यासकारों में से "अज्ञेय" एक है। इस कारण व्यक्ति विकास की विशिष्ट जीवन–दृष्टि का समावेश उनकी रचनाओं में हुआ दिखाई देता है। "अज्ञेय" के "शेखर : एक जीवनी", "नदी के दोप" तथा ष्अपने अपने अजनबीष इन तीनो उपन्यासो में व्यक्तिवादी जीवन–दर्शन दिखाई देता है। चिंतन को मुख्य धारा ष्अज्ञेयष ने अपने उपन्यासों मे अपनायी है। उनके तीनों उपन्यासों में प्रेम को नवीन नैतिकता तथा आत्मपीड़ा का चित्रण, विद्रोह में सिध्दि का समर्थन, व्यक्तिवादी को प्रतिष्ठा और स्वातंत्र्य की खोज, विद्रोह की भावना का प्राबल्य, फ्रायडीयन मनोविज्ञान का प्रभाव, कालानुभवसंबंधी धारणा, मृत्युबोध या मृत्यु से साक्षात्कार की समस्या, अस्तित्त्ववाद की स्थापना आदि विषयों का चित्रण हुआ है। " अज्ञेय" ने अपनी साहित्यकृतियों की रचना करते समय अपने दृष्टिकोण का आधार ही अधिक न्यायोचित माना है। वास्तव में रचनाकार अपनी रचना से कितना तटस्थ रहता है इस पर उसका मूल्यांकन निर्भर करता है, लेकिन अपनी कृति से तटस्थ रहने में अज्ञेय पूरी तरह से

International Journal of Education and Science Research Review
June- 2017, Volume-4, Issue-3 E-ISSN 2348-6457 P-ISSN 2349-1817
www.ijesrr.org Email- editor@ijesrr.org

सफल नहीं हुए है, ऐसा हम मानते है। ष्अज्ञेयष ने अपने उपन्यासों में जो पात्रों की निर्मिती की है वहाँ वे तटस्थ नहीं रहे है, जैसे कि शेखर का बचपन काल उपन्यासकार का अपना बचपनकाल है। भुवन के चरित्र में भी व्यक्तिगत भावनाओं को अधिक व्यक्त किया है। ष्अपने अपने अजनबीष में भी वे पूरी तरह तटस्थ रहने में सफल हो गये है।

संदर्भ :

1. हिन्दी का गद्य साहित्य – डॉ रामचन्द्र तिवारी सं. 1668 , पृ. 548
2. अज्ञेय – साहित्य रू प्रयोग और – डॉ. केदार शर्मा मूल्यांकन सं. 1969 पृ. 16
3. हिन्दी के साहित्यनिर्माता ष्अज्ञेयष – प्रभाकर माचवे सं. 1991 पृ.9
4. आत्मनेपद – अज्ञेय, सं. 1960, पृ. 181
5. अज्ञेय रू चिन्तन और साहित्य – डॉ. प्रेमसिंह सं. 1987, पृ. 139
6. आत्मनेपद अज्ञेय, सं 1960, पृ. 29
7. आधुनिक हिन्दी उपन्यास और नवलकिशोर मानवीय अर्थवत्ता सं• 1977, पृ. 8
8. हिन्दी उपन्यास उद्भव और विकास – डॉ. प्रतापनारायण टंडन सं. 1974,पृ. 171 वहीं पृ. 172
9. अज्ञेय के उपन्यासों को शिल्पविधि –
10. अज्ञेय का कथा साहित्य – सत्यपाल चुघ सं. 1965, पृ. 32 ओम प्रभाकर सं. 1966, पृ. 53 डॉ रामचन्द्र तिवारो, सं. 1968 , पृ. 558
11. हिन्दी का गद्य साहित्य – "अपने अपने अजनबोष – अज्ञेय, आवरण पृष्ठ
12. हिन्दी का गद्य साहित्य – डॉ रामचन्द्र तिवारी सं.1668 , पृ. 556 डॉ. केदार शर्मा सं. 1969,ख पृ. 90
13. अज्ञेय साहित्य रू प्रयोग और मूल्यांकन 16 - अज्ञेय की औपन्यासिक कृतियों – कुसुम त्रिवेदी सं. 1976, पृ. 70
14. अज्ञेय के उपन्यासों की शिल्वविधि – सत्यपाल चुघ सं. 1965, पृ.
15- हिन्दी उपन्यास में कथा – शिल्प विकास डॉ. प्रतापनारायण टंडन सं. 1964श i`-